मसीही व्यक्ति के लिए
पुराने नियम का उपयोग

ह्युगो मेकोर्ड

''इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें'' (गलतियों 3:24)।

जो महत्व एक पेड़ के लिए मुख्य जड़ का होता है वही महत्व मसीहियत के लिए पुराने नियम का है। यीशु और नये नियम के प्रत्येक लेखक ने पुराने नियम का इस्तेमाल किया। आइए उन छह ढंगों पर विचार करते हैं जिन से यह पता चलता है कि प्रत्येक जागरूक मसीही को आज पुराने नियम का इस्तेमाल क्यों करना चाहिए।

खोजपूर्ण प्रारम्भ

नया नियम पुराने नियम को ''सृष्टि के आरम्भ'' (मरकुस 10:6) के बारे में बताते हुए दर्शाता है। इसी प्रकार मनुष्य के आरम्भ से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर पुराने नियम में ही मिलते हैं: ''क्या तुम ने नहीं पढ़ा, कि जिसने उन्हें बनाया उसने आरम्भ से नर और नारी बनाकर कहा'' (मत्ती 19:4)।''प्रथम मनुष्य अर्थात आदम'' (1 कुरिन्थियों 15:45) की चर्चा करते हुए नया नियम पुराने नियम का ही हवाला देता है। एक मसीही व्यक्ति आरम्भ के किसी प्रश्न का उत्तर देते हुए, यीशु और पौलुस की तरह ही उत्पत्ति की पुस्तक का हवाला दे सकता है।

यीशु की ईश्वरीयता का प्रमाण

पुराने नियम की भविष्यवाणियों का अध्ययन करके, हम यह सुनिश्चित करते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। तर्क की बहुत सी बातें एक विचार में संक्षिप्त हो जाती हैं कि यीशु नासरी ही मसीह अर्थात जीवित परमेश्वर का पुत्र था और है। इन बातों में उसकी अद्‌भुत शिक्षाएं (यूहन्ना 7:46), पाप रहित होना (यूहन्ना 8:46), उसके आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 10:25), उसका प्रभाव (प्रेरितों 4:13), और उसका बलिदानपूर्वक प्रेम (यूहन्ना 10:11) शामिल हैं। परन्तु नये नियम के मसीहियों द्वारा जिस प्रमाण पर सबसे अधिक ध्यान दिलाया जाता है, वह पुराने नियम में ही था।

पिन्तेकुस्त के दिन पतरस के संदेश में एक तथ्य की ओर ध्यान दिलाया गया कि यीशु ही ''प्रभु भी और मसीह भी'' (प्रेरितों 2:36ख) है। पतरस ने इसके अधिकतर प्रमाण योएल और भजन संहिता की पुस्तकों में से ही दिए। सुलैमान के ओसारे पर अपने संदेश में पतरस ने दावा किया कि, ''जिन बातों को परमेश्वर ने सब भविष्यवक्ताओं के मुख से पहिले ही बताया था, कि उसका मसीह दुख उठाएगा; उन्हें उसने इस रीति से पूरा किया ...'' (प्रेरितों 3:18-21)। क्योंकि पतरस ने वही प्रचार किया जो पवित्र आत्मा ने उसे बोलने के लिए कहा (प्रेरितों 2:4), इसलिए पुराने नियम का उपयोग अवश्य ही परमेश्वर की इच्छा के अनुसार होगा।

इसी प्रकार, आत्मा के द्वारा बोलते हुए स्तिफनुस ने (प्रेरितों 6:10) मसीह के परमेश्वर की ओर से होने का प्रचार करते हुए उत्पत्ति, निर्गमन, व्यवस्थाविवरण, यहोशू, आमोस और यशायाह का हवाला दिया था। इथियोपिया के उस अधिकारी को यीशु का संदेश सुनाने के लिए फिलिप्पुस ने पुराने नियम के एक हवाले का इस्तेमाल किया (प्रेरितों 8:26-38)। पतरस ने अन्यजाति कुरनेलियुस को यीशु के बारे में बताया कि, ''... सब भविष्यवक्ता गवाही देते हैं, कि जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उस को उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी'' (प्रेरितों 10:43)।

अन्ताकिया में एक संदेश देते हुए, पौलुस ने मूसा की पांच पुस्तकों से सीधे, यहोशू तक, शमूएल की पुस्तक तक, भजन संहिता की पुस्तक तक, हब्बकूक तक, यशायाह तक स्पष्ट हवाले दिए। इसके अतिरिक्त उसने बताया कि यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने से ''भविष्यवक्ताओं की बातें'' (प्रेरितों 13:27) पूरी हुई थीं।

स्पष्टत: नये नियम के दूसरे सभी प्रचारकों की तरह, पौलुस भी यही प्रचार किया करता था कि मसीह के दुख उठाने और फिर से मुर्दों में से जी उठने की भविष्यवाणी हुई थी (देखिए प्रेरितों 17:3)। पुराने नियम का यह उचित और शायद सबसे अधिक महत्वपूर्ण इस्तेमाल स्वयं यीशु द्वारा लूका 24:27 में लागू किया गया था।

संकेतों को समझना

यीशु अपने बारे में भविष्यवाणियों के अतिरिक्त पुराने नियम में रूपकों, संकेतों या परछाइयों में मिलता है। जब एक मसीही बलि के बकरे, फसह के मेम्ने, महायाजक, मन्दिर के पर्दे, मन्ना, या पीतल के सांप के बारे में पढ़ता है तो उसे उसमें मसीह दिखाई देता है। वह आदम, मलकिसिदक, मूसा, दाऊद और योना में भी मसीह को देखता है। वह नूह और जलप्रलय की कहानी को बपतिस्मे के प्रतिरूप में पहचान लेता है (1 पतरस 3:20, 21)। हाजरा और सारा की कहानी को पढ़कर उसे पुरानी और नई वाचाओं का एक रूपक दिखाई देता है (गलतियों 4:21-31)।

इब्रानी लोगों के लाल सागर पार करने में उसे एक पापी का बपतिस्मा दिखाई देता है; जंगल में घूमने पर उसे कलीसिया का उदाहरण मिलता है; और प्रतिज्ञा किए हुए देश में वह स्वर्ग का पूर्व आनन्द देखता है। तम्बू में वह नये नियम की कलीसिया का चित्र देखता है

और याजकाई में, मसीहियत की एक परछाईं देखता है। पुराने नियम के खतने में, वह किसी के जीवन से सुसमाचार के पाप को काटने का एक प्रतिरूप देखता है।

वाचाओं की तुलना करना

पुरानी और नई वाचाओं में मिलते-जुलते सिद्धांत समझाए गए हैं। यह सच्चाई कि मनुष्य केवल रोटी से ही जीवित नहीं रहता, बल्कि परमेश्वर के वचन से भी रहता है, यीशु की तरह मूसा ने भी यह बात स्पष्ट रूप से समझाई थी (व्यवस्थाविवरण 8:3; मत्ती 4:4)। मनुष्य द्वारा परमेश्वर को परीक्षा में न डालने की बात (मत्ती 4:7) आज भी उतनी ही सत्य है जितनी पुराने नियम के पहली बार लिखे जाने के समय थी (व्यवस्थाविवरण 6:16)। मनुष्य के लिए केवल एक सच्चे परमेश्वर की ही आराधना करनी आवश्यक है अर्थात जो सदा से सच्चा है और सच्चा रहेगा (व्यवस्थाविवरण 6:13; मत्ती 4:10)। दोनों ही वाचाओं में, चापलूसी को गलत माना गया है (यशायाह 29:13; मरकुस 7:6)। प्रत्येक वाचा में आज्ञाएं इसलिए लिखी गई थीं कि उन्हें माना जाए (सभोपदेशक 12:13, 14; यूहन्ना 15:10)। प्रत्येक वाचा में परमेश्वर का संदेश शिक्षा के द्वारा दिया जाता है (यशायाह 54:13; यूहन्ना 6:45)। पुरानी व्यवस्था की दो सबसे बड़ी आज्ञाएं (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18) मसीह के अधीन भी बड़ी ही रहती हैं (मत्ती 22:37-39)।

नई वाचा की मुख्य शिक्षाएं पुरानी व्यवस्था के पदों से ली गई हैं। उदाहरण के लिए, पौलुस ने प्रचारकों की सहायता के लिए व्यवस्थाविवरण 25:4 से उद्धृत करते हुए आग्रह किया (1 कुरिन्थियों 9:9; 1 तीमुथियुस 5:18) कि उसने धर्मी जीवन के महत्व को दिखाने के लिए दस आज्ञाओं से उद्धृत किया (रोमियों 13:8-10)। स्त्रियों से पुरुष की अगुआई को मानने का आग्रह करने के लिए उसने पुराने नियम का हवाला दिया (1 कुरिन्थियों 14:34; देखिए उत्पत्ति 3:16)। याकूब ने भी पक्षपात दिखाने के विरोध में सिखाने के लिए दस आज्ञाओं से ही बताया (याकूब 2:8-11)।

वाचाओं में विभन्नता करना

परमेश्वर के राज्य के सिद्धांत पुराने नियम की विधियों के विपरीत अच्छी तरह से देखे जाते हैं। यीशु ने अपने चेलों के लिए "पर मैं कहता हूं" जोड़ते हुए, पुराने नियम से उद्धृत किया (मत्ती 5:21, 22)। पौलुस ने पुराने नियम के खतने और मसीह में नई सृष्टि के हृदय के खतने में विभन्नता पर ज़ोर दिया (यहोशू 5:2; गलतियों 6:15)।

हम नये नियम के जीवित मानवीय बलिदानों के विपरीत पुराने नियम में मृत पशु के बलिदानों (लैव्यव्यवस्था 1:3; रोमियों 12:1) और आत्मिक सियोन के विपरीत भौतिक सियोन (1 राजा 9:3; गलतियों 4:26) को देखते हैं। पहला नियम पत्थरों पर लिखा गया था, जबकि बाद का नियम हृदय पर (2 कुरिन्थियों 3:3)।

उदाहरणों से सीखना

पुराने नियम के लोग परमेश्वर की वफ़ादारी के शानदार उदाहरण उपलब्ध कराते हैं

(इब्रानियों 12:1)। इसी प्रकार, वे परमेश्वर के प्रति वफ़ादार न रहने के परिणाम भी दिखाते हैं। यीशु ने अलीशा और नामान के साथ-साथ एलिय्याह और एक विधवा का हवाला देने के कारण भी पाए (लूका 4:25-27)। उसने अपने संदेश नूह (मत्ती 24:37), योना (मत्ती 12:41), सुलैमान (मत्ती 12:42) लूत और उसकी पत्नी (लूका 17:29, 32) के हवाले देकर समझाए।

पौलुस का मानना था कि इस्राएलियों में पाई जाने वाली आज्ञा न मानने के उदाहरणों से मसीही लोगों की सहायता हो सकती है (1 कुरिन्थियों 10:1-12)। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने पुराने नियम के स्रोतों को इतना भरपूर दिखाया कि उन सबको एक-एक करके नहीं बताया जा सकता था: ''क्योंकि समय नहीं रहा, कि गिदोन का, और बराक और समसून का, और यिफतह का, और दाऊद और शमूएल का, और भविष्यवक्ताओं का वर्णन करूं'' (इब्रानियों 11:32)।

सारांश

यद्यपि पुराने नियम के गलत उपयोग हुए हैं, परन्तु इसका इस्तेमाल उद्धार के लिए लाभयदाक और उचित रूप से किया जा सकता है। यह दिखाता है कि संसार और मनुष्य जाति का अस्तित्व कैसे हुआ और यीशु नासरी परमेश्वर का पुत्र है। पुराने नियम में हमें मसीहियत की परछाईं मिलती है। यद्यपि इसके सिद्धांत नये नियम से मिलते-जुलते हैं, परन्तु इसमें इतनी विषमताएं भी हैं जो स्वतन्त्रता की व्यवस्था की सुन्दरता पर ज़ोर देती हैं। अन्त में यह आज परमेश्वर की आज्ञाकारिता में रहने के लिए लोगों को उत्साहित करने के स्पष्ट उदाहरण उपलब्ध कराता है।